1986 (0072) (072)

120 RESOURCES SHARING (79)

पुस्तकालय साधन स्त्रोतों का पारस्परिक उपयोग

रमेशचन्द्र गुप्त*

पुस्तकालय समाज के विकास माध्यम हैं। विकास के लिए सूचना एक आवश्यक अंग है और सूचना उपलब्धि का स्थान पुस्तकालय माने जाते हैं। पुस्तकालय केवल पुस्तकों को ही नहीं बल्कि आज के युग में पत्रिकाएं, नक्शे, ड्राइंग, चित्र सारिणी, शोध ग्रन्थ, अनुसंधान प्रतिवेदन, विशेष प्रसारण, मानक-ग्रंथ, पेटेन्ट आदि पठनीय सामग्री, फिल्म, रिकार्ड, आदि दृश्य श्रव्य सामग्री तथा टेप, डिस्क, कार्ड आदि यांत्रिक सामग्री को भी अपने में समाहित करती हैं। सूचना उपलब्धि के इन रूपों में तीन प्रकार की सूचनाएं मिल सकती हैं। मूल सूचना जिसमें मूल विचार प्रथम बार में प्रकाशित होते हैं इनमें अनुसंधान, ग्रन्थ, विचार गोष्ठी के पत्र, लेख, व्याख्यान पत्रिका आदि शामिल की जाती हैं। दूसरे स्तर की सूचना में मूल सूचना पर आधारित वे सभी सूचना तत्व जो पाठक को मूल सूचना को सूक्ष्म रूप में प्रस्तुत करते हैं, जिससे पाठक को स्वयं साहित्य सागर मन्थन में अपना अमूल्य समय न खर्च करना पड़े। तीसरे स्तर की सूचनाएं दूसरे स्तर की सूचनाओं पर आधारित तत्व जिनमें सूची, दिग्दर्शक, सारणी आदि आते हैं।

इन सब सूचना विन्दुओं का जन्म विभिन्न स्थानों पर जो एक दूसरे से काफी दूर भी होते हैं (देश, विदेश में) विभिन्न भाषाओं के माध्यम से होता है। जिनके कारण सूचना प्राप्ति में व्यवधान आना स्वाभाविक हैं।

पुस्तकालय सहयोग की आवश्यकता :

यदि यह कल्पना की जाए कि जितने पाठक हैं उन सबकी रुचि एक जैसी है, उनकी आवश्यकता अथवा पढ़ने की इच्छा के अनुरूप पठन सामग्री भी उपलब्ध है और उस सबको उपलब्ध कराने के लिये पुस्तकालय के पास धन की कोई कमी नही हैं तो उसका दोहन, प्रलेखीकरण, प्रस्तुतीकरण एवं उपयोग कराने में पुस्तकालय स्टाफ कितना संतुष्ट होता, किंतु स्थिति की गम्भीरता एवं जटिलता की सीमा बहुत दिशाओं में बढ़ती जा रही हैं। प्रकाशित एवं अप्रकाशित ग्रन्थों की संख्या प्रायः सभी विषयों में इतनी अधिक मात्रा में बढ़ रही है कि उनका उपयुक्त चयन, प्राप्तिकरण, प्रस्तुतिकरण, उपयोग सभी

* अवैतनिक प्रधानाचार्य, पुस्तकालय विज्ञान प्रशिक्षण केन्द्र, रुड़की।

ग्रंथालयी खण्ड 5 दिसम्बर 1986

जटिलतर बनता जा रहा है। दूसरी ओर पुस्तकालय के पास उपलब्ध धन, कार्य करने के लिए स्टाफ, भवन, साज सामान, यंत्र, कार्य समय एवं भाषा एकदम सीमित है। पाठकों की मांग दूसरे एवं तीसरे स्तर के सूचना स्रोतों के लिये बढ़ती जा रही हैं क्योंकि प्रत्येक क्षेत्र में ग्रंथों की संख्या में वृद्धि के कारण पाठकों के लिये सभी उपलब्ध सामग्री पढ़ पाना न सम्भव है और न ही पाठकों के पास इतना समय है। ऐसी स्थिति में स्वयं सब कुछ कर लेना सम्भव नहीं जान पड़ता। आवश्यकता इस बात को है कि अधिक से अधिक सूचना स्तंभ उपलब्ध साधनों से ही प्राप्त किये जायें।

सहयोग का क्षेत्र

१- पाठक-पाठकों की आवश्यकता, जानने के लिये अध्ययन, सर्वेक्षण

२- पठन सामग्री-ग्रंथ, पत्रिकाएं आदि।

३- कर्मचारी-तकनीकी कर्मचारियों का आदान प्रदान।

४- परम्परागत कार्य-चयन, वर्गीकरण, सूचीकरण, व्यवस्थापन, लेनदेन।

५- सूचनागत कार्य-प्रलेखीकरण, सूचना-सेवा, अनुवाद,

६- यन्त्र, भवन, साजसज्जा

७- सर्वेक्षण, मानकीकरण

८- प्रचार प्रसार सेवा

९- प्रशिक्षण

कार्यक्षेत्र = १-अन्तर्राष्ट्रीय २-राष्ट्रीय, ३-क्षेत्रीय, ४-स्थानीय

सहयोग की परिकल्पना

प्राय: जीवन का हर क्षेत्र कहीं न कहीं परस्पर सहयोग की कल्पना पर आधारित है किन्तु इसको स्थाई कार्य रूप देने में कुछ आवश्यक सावधानियों का ध्यान भी रखना आवश्यक है अन्यथा सहकारिता केवल कागजों में लिखा एक लेख बनकर रह सकती है।

समान कार्य क्षेत्र

परस्पर सहयोग तभी संभव होगा जबकि भाग लेने वाले पुस्तकालय एक ही या समान उद्देश्यों वाले संस्थानों से सम्बन्धित हों। उदाहरणार्थ, इन्जीनियरिंग संस्थानों के पुस्तकालय चाहे वे शैक्षणिक, औद्योगिक, अनुसंधानात्मक भी हो आपस में सहयोग कर सकते हैं। किन्तु मेडिकल संस्थान के पुस्तकालय और इंजीनियरिंग पुस्तकालय का आपस में सहयोग बहुत सीमित होगा

परस्पर विश्वास

यह आवश्यक तो नहीं कि सभी भाग लेने वाले पुस्तकालय एक ही जैसे आकार के हों। छोटे

पुस्तकालय बड़े पुस्तकालयों से अधिक लेने और कम देने की स्थिति में होंगे किन्तु दूसरी तरफ विशिष्ट पुस्तकालय छोटे होते हुए भी अधिक देने की स्थिति में हो सकते हैं। एक अन्य बात कुल व्यय को आपस में बांट कर खर्च करने की भी है अन्यथा मतभेद की स्थिति उत्पन्न हो सकती है।

एक तकनीक पर सहमति

तकनीकी कार्य परस्पर सहयोग से तभी किए जा सकते हैं जबकि विभिन्न प्रचलित तकनीकों जैसे वर्गीकरण पद्धति, सूचीकरण, आदान प्रदान प्रणाशी, प्राप्तिविधि, प्रलेखीकरण, बहुप्रतिकरण, यांत्रिक प्रयोग आदि पर पूर्व सहमति हो अन्यथा हर एक को अपना-अपना कार्य करना होगा और सहयोग मितव्ययी नहीं हो सकेगा।

सहयोग भावना एवं उसका क्रियान्वयन

सहयोग की भावना एवं उस पर कार्य करने की ईमानदारी से इच्छा इस कार्यक्रम की आधारशिला है। भारतीय परम्परा जिसमें दूसरे की जरूरत पूरी करने के लिये अपनी जरूरत में कमी अथवा बचत की जाती हैं इस भावना को पूरा करने में सहायक हो सकती है।

विभिन्न कार्य क्षेत्रों में सहयोग का प्रारूप

पाठकों की रुचि का पता लगाने, उनका व्यवहार तथा पुस्तक या उसकी जानकारी सम्बन्धी सूचना को खोजने का तरीका जानना उतना ही आवश्यक है जितना उनको सेवा प्रदान करना। जब तक पाठकों की रुची का अध्ययन नहीं किया जाता सही सेवा देना कठिन है। किंतु यह उतना सरल नहीं है। समय के साथ धन तथा कर्मचारी को भी काफी जरूरत पड़ती है। एक केन्द्र अपने समस्त साधनों के साथ इस समस्या का बड़ी आसानी से समाधान कर सकता है। जब तक केन्द्र की स्थापना नहीं होती स्थानीय या क्षेत्रीय स्तर पर कुछ समान विचारधारा वाले पुस्तकालय सर्वेक्षण एवं अध्ययन का कार्य आपस में मिलकर कर सकते हैं।

पठन सामग्री

पाठकों की रुचि का पता लगा लेने के बाद एक पुस्तकालय में यह जान लेना आसान होगा कि उसका मूल विषय तथा उसका स्तर क्या है तथा सहायक विषय तथा रुचि की सीमा कहां तक हैं। मूल विषय पर पुस्तकें, पत्रिकाएं, संहिताएं, अन्य सामग्री इसी आधार पर मंगवाई जाएं। यदि एक समान रुचि के एक से अधिक पुस्तकालय हो तो प्राथमिकताओं के आधार पर मिलकर प्राप्ति कार्यक्रम बनाया जाएं। सहायक विषय तथा रुचि की सामग्री उन पुस्तकालयों में खरीदी जा सकती हैं जहा वे विषय मूल विषय की श्रेणी में आते हों। यदि ऐसी स्थिति नहीं है तो उन विषयों को भी सहमति से बांट लिया जाये।

पाठकों की मांग जो अपने पुस्तकालय से पूरी न हो सके उनको जिन पुस्तकालयों में वे उपलब्ध हैं उनके अनुसार सूची तैयार की जाएं तथा आवश्यकतानुसार उनके लाने का प्रबन्ध किया जाए। जो सामग्री लौटानी हो उसको भी साथ ही लौटा दिया जाये। इस विषय में निम्न विधि विचारणीय हैं।

एक स्थानीय स्तर पर जहां एक जैसे विषय पर पांच से दस पुस्तकालय आपस में सहयोग कर हे हैं वहां पर एक स्टेशन वैगन सामूहिक रूप हे खरीदी जा सकती है या किसी उपलब्ध परिवहन का योग किया जा सकता है। एक व्यक्ति एक चक्कर में सभी सहयोगी पुस्तकालयों की मांग को सम्बन्धित स्तकालयों में पहुंचा दे तथा दूसरे चक्कर में पुस्तकें। यह चक्र नियमित रूप से चलने से सुविधाजनक ंग से संग्रह सहयोग किया जा सकता है।

र्मचारी

प्रशिक्षित कर्मचारी आधुनिक तकनीकों को, कार्य प्रणालियों को अधिक तेजी से अच्छी तरह से ागू करके बेहतर सेवा दे सकते हैं। किन्तु हर विधा में प्रवीण प्रशिक्षित स्टाफ रख पाना हर पुस्तकालय ं लिए सम्भव नहीं है। दूसरी तरफ एक व्यक्ति थोड़ी-थोड़ी देर सब तरह के काम करते हुये अपनी शिष्टता भी नहीं कायम रख पाता। ऐसी स्थिति में उसके ज्ञान का ह्रास तथा सेवा के स्तर में गिरा-ट आती है तथा सेवा का मूल्य बढ़ जाता है। यदि सेवा का क्षेत्र व्यापक कर प्रशिक्षित स्टाफ की युक्ति इस प्रकार हो कि स्टाफ दूसरे पुस्तकालयों में या उनके लिए भी काम करें तो उनकी विशिष्टता ी बनी रहेगी और सेवा बेहतर तथा कम मूल्य वाली बन सकती हैं।

ार्य परम्परागत

पुस्तकालय में पुस्तक चयन से लेकर आदान प्रदान तक के सभी कार्य सहकारिता के ाधार पर किए जा सकते हैं जिससे कम समय में अधिक से अधिक कार्य हो सकते हैं जिससे खर्च में मी एवं सेवा में बेहतरी लाई जा सकती है साथ ही संघीय पुस्तकालय सूची भी स्वतः बनाई जा सकती जिससे अन्तरपुस्तकालय आदान प्रदान में आशातीत गति आ सकती है।

चनागत कार्य

आज के युग में दूसरे तथा तीसरे स्वर की सूचना सेवा उत्तरोत्तर आवश्यक बनती जा रही है। रेंट अवेयरनेस सरविस, एस. डी. आई. सार सेवा, रिव्यूज आदि सेवा के साथ पुस्तकालय अपना हत्व समाज में बढ़ा रहे हैं। लेकिन ये सेवायें काफी खर्चीली हैं जिसमें मानव शक्ति, धन तथा यन्त्रों का योग मुख्य हैं। ये कार्य चाहे एक पुस्तकालय के लिए हो या दस के लिये (समान विषय क्षेत्र वाले) खर्च राबर ही रहेगा या अनुपातिक रूप से बहुत कम अन्तर पड़ेगा। अतः क्यों न कुछ पुस्तकालय मिलकर ये वायें प्रदान करें। इसी प्रकार एक भाषा से जो पाठक न जानते हो और जिसमें लेख, ग्रंथ प्रकाशित हो स भाषा में जिसे वे आसानी से समझ सकते हों अनुवाद कराना भी काफी कीमती है। इसके लिये भी ापस में सहयोग बहुत जरूरी है।

न्त्र

पुस्तकालय में छोटे यन्त्र से लेकर जैसे माइक्रो फिल्म रीडर, प्रोजेक्टर, प्रिंटर, फोटो-कापियर, ीराक्स, डस्ट क्लीनर, कम्प्यूटर, डुप्लीकेटर आदि यंत्र बहुत आवश्यक बनते जा रहे हैं लेकिन सब्र को

हर पुस्तकालय प्राप्त कर ले ऐसा सम्भव नहीं है। इसके लिए बेहतर है कि इनका प्रयोग सामूहिक सहयोग के आधार आवश्यकता पड़ने पर सभी के द्वारा किया जाए। इस पर आने वाला व्यय सभी भागीदार अपने प्रयोग के अनुपात या जैसा आपस में सहमति हो के आधार पर किया जाय तो पाठक को सेवा देने में सुविधा हो सकती है।

प्रचार एवं प्रसार सेवा

आज का युग प्रचार माध्यमों पर जैसे रेडियो, दूरदर्शन, मेले, प्रदर्शिनी, व्याख्यान, आदि प्रसार सेवाओं पर निर्भर करता है। पुस्तकालय सेवा को गहनतम तथा प्रभावी बनाने तथा क्षेत्र विस्तार के लिए इसका प्रचार आवश्यक ही है। किन्तु यह भी एक भी एक खर्चीला माध्यम है जिसे सहयोग के आधार पर करके कम से कम खर्च में उद्देश्य की प्राप्ति की जा सकती है।

मानकीकरण एवं सर्वेक्षण

पुस्तकालय आपस में मिल कर विभिन्न कार्य विधियों का मानकीकरण कर सकते हैं जिससे बार-बार किए जाने वाले कार्यों को कम समय में निपटाया जा सकता है। मानकीकरण प्रक्रिया काफी समय तक, विचार विमर्श एवं परख के बाद ही बनाई जाती है जो स्वयं में काफी खर्चीली पड़ती है। इसी प्रकार पुस्तकालय के विभिन्न कार्य कलाप, कार्य प्रणाली कैसा काम कर रही हैं, उनमें कहां और कैसे सुधार किया जा सकता है आदि पर विचार विनिमय के द्वारा, सर्वेक्षण के द्वारा ही कुछ निष्कर्ष निकाले जा सकते हैं। सर्वेक्षण प्रश्नावली पद्धति, व्यक्तिगत साक्षात्कार आदि से करने पर काफी खर्चीले साबित भी है। इसलिए ये कार्य भी सहयोग के आधार पर आसानी से किए जा सकते हैं।

कर्मचारी प्रशिक्षण

कार्यरत कर्मचारियों को नयी तकनीकों में व्यवहारिक प्रशिक्षण दिलाना भी आवश्यक है। जब तक एक पुस्तकालय दूसरे पुस्तकालय को अपनी कार्य विधि जानने, देखने, की सहमति नहीं देता; स्टाफ अपना ज्ञान बिना नियमित ट्रेनिंग पर जाए बढ़ा नहीं सकता और नियमित ट्रेनिंग व्यक्ति तथा संस्था दोनों के लिए समय, धन, एवं कष्ट साध्य होती है। पारस्परिक सहयोग इस समस्या का समाधान कर सकता है।

प्रकाशन

पुस्तकालयों में प्रकाशन के लिए उसके अपने सर्वेक्षण की रिपोर्ट, अपने पाठकों के लिए आवश्यक दिशा निर्देश, दिग्दर्शन, सूची, ओरियंटेशन प्रोग्राम आदि बहुत सी सामग्री होती है। इस तरह का प्रकाशन कार्य, सम्पादन का कार्य, जिल्द साजी आदि के कार्य काफी समय एवं धन चाहते हैं। यदि एक सामूहिक प्रकाशन विभाग बन जाय तो सभी पुस्तकालयों की प्रकाशन की समस्याएं सुलझ सकती हैं और उनके हिस्से में पहले से कम खर्च आ सकता है।

सहयोग की परिस्थिति

परस्पर विचार करके तय किया गया प्रारूप यद्यपि सबसे अच्छा सभी को मान्य तथा अधिक समय तक चलते रहने वाला हो सकता है किन्तु व्यवहारिक स्तर पर ऐसा नही है। इसी कारण यह आन्दोलन व्यापक रूप आज तक ग्रहण नहीं कर पाया। केवल अंतरपुस्तकालय आदान प्रदान सेवा तक ही सीमित होकर रह गया है।

केन्द्रीय सरकार के विज्ञान एवं तकनीकी विभाग ने वैज्ञानिक एवं तकनीकी सूचना को एकत्र करने, उसको उपयोग करने के लिए दोहन तैयार करने एवं प्रस्तुतिकरण करने के लिये एक राष्ट्रीय विज्ञान एवं तकनीकी सूचना प्रणाली (NISSAT) का गठन किया है। इसके अर्न्तगत अब तक खाद्य विज्ञान, चर्म विज्ञान, यन्त्र विज्ञान, औषध विज्ञान पर राष्ट्रीय केन्द्र स्थापित किये जा चुके हैं। हर ऐसे केन्द्र को किसी मुख्य विचारधारा पर अर्न्तराष्ट्रीय स्तर पर उपलब्ध सभी ग्रंथ तथा अन्य पाठन सामग्री की प्राप्ति, संगठन एवं प्रस्तुतीकरण करने का उत्तरदायित्व सौंपा गया है।

आवश्यकता इस बात की है कि इसी तरह के दूसरे विषयों से सम्बन्धित केन्द्र भी शीघ्र से शीघ्र खोले जाएं तथा विज्ञान एवं तकनीकी क्षेत्र के अतिरिक्त, समाजशास्त्र कला, साहित्य आदि की भी ऐसी प्रणाली विकसित की जाय जिससे सारे देश को पुस्तकालय सेवा अविलम्ब एवं सुचारू रूप से मिलती रहे। इन केन्द्रों को आपस में एक दूसरे से सीधे तथा एक राष्ट्र के केन्द्रों को दूसरे राष्ट्र के किसी भी इस जैसे केन्द्र से आवश्यकता पड़ने पर आदान प्रदान की सुविधा मुख्य केन्द्र के माध्यम से मिलती रहे ऐसी व्यवस्था होनी चाहिए ताकि पूरे विश्व का ज्ञान हर एक मानव को चाहे वह किसी भी देश, जाति भाषा या विषय का हो उपयोग करने की सुविधा मिल सके। जिससे वह अपनी और अपने समाज की प्रगति में योगदान कर सके।